** INDEX **

क्रं	शोध पत्र एवं शोधकर्ता का नाम	पृक्रं
1	Ethico-Moral Issues in Bhavbhuti's Uttarramcharitam * Mrs. Joyce Anjali Gulab	1
2	आधुनिक युग में बढ़ते अपराधों के उन्मूलन की चुनौतियां * डॉ. ममता राजपूत	3
3	मध्यप्रदेश में जिला सरकार : विधान एवं नियम * डॉ. हरीश लोखंडे	5
4	Case Study: Kesavananda Bharati vs State Of Kerala And Anr 24 April, 1973 * Chirag Banthiya	7
5	Consequence of Food Deprivation on Dry Mater Utilizations, Shell and Cocoon Weight and Fecundity of Multivoltine Silk Moth *Bombyx Mori* * Hemant Saxena ** S.M. Jain	10
6	मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् अंशकालीन प्राध्यापकों की स्थिति * डॉ. दीपक कुमार मानकर	16
7	Plastic - Highly Hazardous Material of the Century * Mrs. Manisha Marathe ** Dr. P. K. Mishra	19
8	India: Section 138 Negotiable Instruments Act, 1881 – A Depth Analysis * Aprajita Bhargava	21
9	सल्तनतकालीन प्रशासन का प्रभाव * डॉ. साहेबराव झरबड़े	27
10	डॉ. प्रेमभारती का शैक्षणिक अवदान * डॉ. सुरेश खाडे	29
11	बालाघाट जिले में सामान्य शिक्षा की तुलना में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति बढ़ता रूझान – एक समीक्षात्मक अध्ययन * हुकुम चन्द हनवत	31
12	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं विद्यालयीन परिवेश के प्रभाव का अध्ययन * सतीश गावंडे, ** डॉ. आलोक शर्मा	33
13	होशंगाबाद संभाग में स्नातक स्तर पर स्त्री शिक्षा की मनो–सामाजिक समस्याओं का एक अध्ययन * धमेन्द्र कुमार बिन्झाड़े, ** प्रो. डॉ रत्नमाला आर्य	36
14	बच्चों के मौलिक अधिकार के रूप में प्राथमिक शिक्षा एक विश्लेषण * डॉ0 भोलूसिंग मर्सकोले,	39
15	प्रहलाद तिवारी कहानी संग्रह – एक पुनरावलोकन * श्रीमती जयश्री सोनारे	42
16	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको के समायोजन पर कार्य संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन * डा.अनामिका पांडे, * * ज्ञानदेव देशमुख	44
17	प्रबंधन शिक्षा में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन * भारती चौरसिया	47
18	शासकीय विद्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन * श्रीमती लेखा चौरे	50
19	डॉ. रामनारायण शर्मा की कहानियॉ : तथ्य और कथ्य * लोकेश कुमार	53
20	अनुसूचित जाति–जनजाति एवं आर्थिक विकासोन्मुखी योजनाएँ * अजाब खातरकर	55

****

Satpuda Research Journal ISSN No. 2349-4069 Year-2017 Oct-Dec. Vol-III, Issue-4

डॉ. रामनारायण शर्मा की कहानियॉ : तथ्य और कथ्य

लोकेश कुमार (शोधार्थी)

डॉ.रामनारायण शर्मा पं.कन्हरदास के कुलदीपक हैं। पं.कन्हरदास ब्राह्मणों में श्रेष्ठ और आदरणीय अड़जरिया वंश से संबधित थे। इसी कारण से ब्राह्मणों के इतिहास और कुल में उनका स्थान सर्वोपरि था। पं. कन्हरदास डॉ.शर्मा के पूर्वज तथा कुल के शलाका पुरूष रहें हैं। हिन्दी साहित्य के आचार्य कवीन्द्र केशवदास जी ने अपने ग्रंथ 'वीरसिंहदेव चरित' में पं.कन्हरदास का परिचय इन शब्दों के दिया हैं–

''ज्यों वशिष्ट दशरथ के मित्र,रामचन्द्र के विश्वामित्र।
वीरसिंह त्यों मंत्री कर्यों, कन्हरदास विप्र मति धर्यो ''

उल्लेख है कि पं.कन्हरदास ओरछा नरेश महाराजा वीरसिंह देव के मंत्री और राजगुरू थे। वे वीरसिंह देव से लेकर राजा मधुकर शाह के शासनकाल तक इस पद पर प्रतिष्ठित रहे। कन्हरदासजी असाधारण मनीषा सम्पन्न प्रतिभाशाली और संस्कृतनिष्ठ पंडित थे। इन्हीं कन्हरदास की वंश–परम्परा में डॉ.रामनारायण शर्मा परिगणित हैं। डॉ.शर्मा के पूज्य पिताजी आचार्य चतुर्भज 'चतुरेश' फाग के फडों में 'मनप्यारे' के नाम से जाने जाते थे, तथा एक प्रतिभा सम्पन्न आशु कवि थे। डॉ.शर्मा के अग्रज पं.कन्हैलाल शर्मा 'कलश' बुंदेली के सशक्त साहित्यकार रहे हैं। उनके दूसरे अग्रज पं.बलराम शास्त्री बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। वे ज्योतिषी वैद्य और कुशल समाज–सुधारक और शिक्षक रहे हैं साहित्य के क्षेत्र में भी सफल साहित्यकारों में माने जाते हैं। साहित्यकार और कवियों वे इसी परम्परा से प्राप्त काव्य रचना के गुण और प्रतिभा ने बुंदेली साहित्य में डॉ. रामनारायण शर्मा जैसा नक्षत्र प्रदान किया हैं। उनके लेखन से जुड़े प्रेरक प्रसंग यहॉ उदधृत करना मैं समीचीन समझता हूँ।

डॉ.रामनारायण शर्मा को साहित्य लेखन का गुण विरासत में प्राप्त हुआ हैं। उनका पूरा परिवार साहित्यानुरागी एवं सृजन धर्मा परिवार रहा हैं। स्वाभाविक है, कि परिवेश ने उन्हें साहित्य–सृजन की ओर उन्मुख किया। डॉ.शर्मा ने स्वयं लिखा है, कि विज्ञान के विद्यार्थी होते हुए भी साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही हैं''। मैंने सन् 1952 में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इस समय मेरी शिक्षा का माध्यम व स्परूप पूर्णतः बदल चुका था। विज्ञान का विद्यार्थी होते हुए भी मुझे हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त हुई थी। हिन्दी के प्रति मेरे मन प्रारम्भ से ही अभिरूचि रही है। विद्यालय की साहित्यिक ओर सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेने लगा था। विद्यालय में आयोजित होने वाली कवि–गोष्ठियों,भाषण ,वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में मेरी सक्रिय भागीदारी होती थी। इनमें अपनी दक्षता के प्रदर्शन के फलस्वरूप मैं पुरस्कृत व सम्मानित होता रहा। ये पुरस्कार और सम्मान ही उन्हें एक श्रेष्ठ साहित्यकार बनाने के प्रेरक तत्व रहे हैं।

जिन दिनों डॉ.शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे.बी. एस–सी. के छात्र थे, उन दिनों प्रयाग विश्वविद्यालय के साहित्यिक वातावरण से प्रभावित हुए। यहॉ उनकी प्रतिभा में निखार आता गया और साहित्य–सृजन में का बीजारोपण हुआ उन्होंने प्रयाग के साहित्यिक वातावरण के प्रभाव को इन शब्दों स्पष्ट किया है –

उन दिनों इलाहाबाद में कविसम्राट सूर्यकांत त्रिपाठी निराला डॉ.हरिवंशराय बच्चन,डॉ.रामकुमार वर्मा,फिराक गोरखपुरी,महादेवी वर्मा,सुमित्रानंदन पंत,अमरनाथ झा और लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय जैसे महान साहित्यकारों का दर्शन लाभ प्राप्त किया। गंगा तट की सुरम्य झॉकी देखकर मेरा मन अभिभूत होता रहा और मैं सृजन की दिशा में उत्तरोत्तर बढ़ता रहा' इस समय की तमाम विश्वविद्यालय गतिविधियों चित्र उनकी त्रिसा नाम की कहानी में उभकर सामने आये हैं। विश्वविद्यालय की साहित्यिक गतिविधियों में वे सदैव सम्मनित होते रहे और सम्मान तथा पुरस्कार पाते रहे।

जब डॉ.शर्मा चिकित्सा महाविद्यालय लखनऊ में एम.बी.बी.एस. के छात्र थे, उस समय अपने अध्ययन की व्यस्तता रहते हुए भी वे साहित्य से जुड़े रहे, इस समय चिकित्सा महाविद्यालय की क्लिनिकल सोसायटी द्वारा आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया इस प्रतियोगिता में उन्हें पुरस्कार स्वरूप कविवर रामधारीसिंह दिनकर रचित 'संस्कृति के चार अध्याय' ग्रंथ दिया गया, जिससे उनके सृजन अनुरागी मन को प्रेरणा मिली।

मूक प्राणियों की पीड़ा का साहित्यकार डॉ.शर्मा के मन पर विशेष प्रभाव पड़ा। यही कारण है, कि मूक प्राणियों के बलिदान को देखकर वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि अपना शोध प्रबंध उन्ही को समर्पित कर दिया। चिकित्यालय की समस्त गतिविधियों को स्थान देते हुए उन्होंने 'जीवन प्रहरी' नामक संस्मरणात्मक उपंयास का सृजन किया। उन्होंने लिखा है–''अस्पताल एक मिनी संसार हैं, जहॉ जीवन के हर रंग, सुख–दुःख, भाव–कुभाव, करूणा–रूदन, हास–विहास सब देखने को

• शोधार्थी

मिलते हैं। संवेदनशील मन इन्हीं में से साहित्य सृजन के प्लॉट ढूँढ लेता है। यही मेरे साथ भी हुआ 'आत्म निवेदन' मेरी पहली कविता के स्वर यहीं प्रस्फूटत हुये। सच टुकड़ा–टुकड़ा' हिन्दी कहानी संग्रह के अधिकांश प्लॉट मुझे अस्पताल के प्रांगण में मिले ''जीवन प्रहरी'' उपन्यास तो पूरी तौर पर अस्पताल की गतिविधियों पर आधारित है। 'वट–वृक्ष' इसी समय शुरू किया और कविताएँ जो 'अन्तर्ध्वनि' में संग्रहित हैं, अधिकांश इसी समय की सर्जना हैं।

समय परिस्थिति और प्रेरणा से प्रभावित डॉ. रामनारायण शर्मा आज बुंदेली के ही नहीं खड़ी बोली हिन्दी के भी सशक्त और लब्ध–प्रतिष्ठ साहित्यकार हैं। वे न केवल गद्यकार अपितु एक श्रेष्ठ पद्यकार भी है। बुंदेली – माटी में जन्में, पले–बढ़े डॉ.शर्माजी का बुंदेली के प्रति सहज अनुराग हैं। यहीं कारण है कि सृजन – क्षेत्र में उन्होंने बुंदेली को विशेष स्थान दिया हैं। सही मायने में कहा जाए तो उन्होंने बुंदेली साहित्यकार होकर बोली–भाषा के ऋण को चुकाने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. बुंदेली भाषा साहित्य का इतिहास – डॉ.रामनारायण शर्मा
3. अक्षत चंदन (अभिनंदन ग्रंथ) – डॉ.रामनारायण शर्मा
4. कन्हरदास (अभिनंदन ग्रंथ) – डॉ.रामनारायण शर्मा

——00——